सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 190

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 39
अक्टूबर – 2020

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

गुरूबंधु भगिनियों

पिछले अंक से आगे...

आठवें सम्मेलन में आप भक्तों को सेवक अवस्था का लाभ करवा दिया है, जिस वक्त ऐसा बताया गया उस वक्त आप भक्त उत्तेजित हुए और समाज में कुछ कार्य करें ऐसा आपको लगने लगा। परन्तु आज ऐसी वस्तुस्थिति है कि आज गोवा, बेलगाँव, कराड़, पूना, मुम्बई, जलगाँव, रत्नागिरी, विजापुर, दिल्ली केवल इतने ही स्थानों पर समिति के कार्यकेन्द्र है, और वहाँ पर कार्यार्थ सेवक नियुक्त है। परन्तु सेमिनार में उपस्थित चार सौ सेककों को कार्यार्थ कार्यकेन्द्र न होने से, आपको प्राप्त सेवक अवस्थाद्वारा कार्य करें ऐसा सूचित किया जाने पर, इसका अर्थ न समझने से सेवक हमें कार्य करने की आज्ञा एवं मौका कब मिलेगा सोचते बैठे है। परन्तु ईश्वरीय कार्यार्थ अधिक कार्यकेन्द्रों का निर्माण करना याने कार्य न होकर, भविष्य में कार्य का प्रचार न होकर, केवल फैलाव बन कर रह जायेगा और ये ही सोचकर श्री गुरू ने हरेक सेवक का परिवार एवं जहाँ पर वे रहते हैं, निवास करते है, उसी को अपना 'कार्यकेन्द्र' बनाया है। और इसका स्पष्टीकरण याने अब भविष्य में दूसरों के कल्याण के लिये "हे भगवन्ता नारायणा" केवल इतनी ही प्रार्थना। जिस प्रार्थना में हम मानवों के कल्याणार्थ सिद्धसिद्धांत पद्धति है। इस प्रार्थना का उच्चार हम सेवकों ने नित्यरूप से हमारे परिवार के सदस्यों के साथ बैठकर करना है। अन्य कोई दिव्य साधन करके या दूसरों से करवाकर इस समिति के कार्य का प्रचार नहीं करना है।

"प्रार्थना" यह सर्वश्रेष्ठ साधन है। जगत में सारे धर्मों में प्रार्थना को जितना महत्व है उतना प्रार्थना परत्वे विधियों को नहीं है। इसे हम सेवक ध्यान में रखें। हमारी पूर्व अवस्था में हमारी देहिक अवस्था के आसमंत में अनेक दूषित वलय थे। इसके अलावा देहिक एवं आत्मिक इन अवस्थाओं का एकरूपत्व आनन्दमय कोष से नहीं हुआ था। जिसके कारण पहले भी साधन सेवा या कृपाशीर्वाद प्राप्त था फिर भी उसकी संवेदना हमारे

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

काया–वाचा–मन को नहीं होती थी। आज हमारी देहिक एवं आत्मिक अवस्था निकोप (शुद्ध) होकर सदगुरू रूप बन चुकी है। जिससे अब हमारा काया–वाचा–मन पूर्वजन्म परत्वे किसी भी ऋणानुबन्धों में उलझा नहीं है, और अब उसका श्री सद्गुरू कृपाशीर्वाद के रूप में उदय हो चुका है। इसे हम भक्तों ने ध्यान में रखना चाहिये।

आज जगत में हरेक धर्म में धर्मगुरू है। वे जो भी प्रार्थना कहते है, उन्हें हम भक्तिभावना के साथ श्रद्धापूर्वक सुनते है, उनके मुख से निकले शब्द याने परमेश्वर का कृपाशीर्वाद प्राप्त करने का एक माध्यम है, इस श्रद्धा के साथ कुछ विधि करते है। उदाहरण के लिये, यदि ग्यारह वैदिक, ग्यारह बार रूद्र आवर्तन कहें तो भगवान का लघु रूद्राभिषेक होता है, ऐसी हमारी श्रद्धा है। और उस श्रद्धा परत्वे आज सर्वत्र ऐसी विधि होती है। परन्तु हम इसके बारे में थोड़ा भी नहीं सोचते कि जो व्यक्ति प्रार्थना माध्यम द्वारा भगवान को आह्वान कर रहे हैं, उसका देहिक एवं आत्मिक विकास कितना हुआ है?और यदि उस व्यक्ति का देहिक एवं आत्मिक अवस्था विकसित न हो और उनकी हमारे लिये प्रार्थना करना यह केवल उदर निर्वाह करने का साधन मात्र होने से, यद्यपि सालों–साल इन प्रार्थना विधियों के करने पर भी इष्टफल प्राप्ति नहीं हो सकती।

गुरूकृपाशीर्वाद से जब देहिक एवं आत्मिक अवस्थाएँ विकसित होकर प्राप्त जीवन गुरूमय हो जाता है। तब इस त्रिभुवन में वास करने वाला परमेश्वर, हमारी साद (बुलाना) को साकार करने के लिये सदैव तत्पर रहता है। और इन्हीं सिद्ध साधन पद्धतियों के बारे में सोचकर ही श्री गुरू ने हम भक्तों को नित्यरूप से कहने के लिये प्रार्थना दी है। और वह प्रार्थना जब हम भक्तों के परिवार के हर सदस्य के वाणी माध्यम द्वारा उच्चारित होगी उन उच्चारों को स्पंद या ध्वनि इस आसमंत के वातावरण को शुद्ध करने का कार्य करेंगे। आज जगत में कुछ दुःख और अशांति फैली हुई है। उसका कारण हरेक का जीवन के प्रति अज्ञान है। और इस अज्ञानतावश हरेक व्यक्ति केवल ऐहिक विषयापरत्वे जीवन व्यतीत करने के बारे में सोचता है। और उनके मन में उत्पन्न ये ही विचार इस वातावरण में विलीन होकर हम मानवों को सुख–शांति के लिये जिस शुद्ध नैसर्गिक वातावरण की आवश्यकता होती है, उसे दूषित बना देते है और इसके कारण किसी भी देवदेवताओं के मार्ग का अवलम्ब करने के बावजूद हमें सुख–शांति–समाधान की प्राप्ति नहीं हो सकती।

सर्वश्रेश्ठ साधना या इश्ट जीवन का विकास करने का माध्यम जिससे काया–वाचा–मन का एकरूपत्व होना आवश्यक है। वह परिपूर्ण साधन याने "प्रार्थना" यदि प्रार्थना के बारे में सोचें तो वह छोटी महसूस होती है परन्तु उसका कार्य महान है इसे हमने ध्यान में रखना अत्यावश्यक है। आज गुरूकृपा के कारण हम भक्तों की देहिक एवं आत्मिक शक्ति एक रूप हो चुकी है। और हमें जो प्रार्थना करनी है उसमें गुरूकृपाशीर्वाद से हम मानवों के कल्याण के लिये जो भी साध्यसिद्धता है, उसका समावेश इस नित्य सूचित की गई प्रार्थना में होने के कारण, इस प्रार्थना माध्यम से बहुजन समाज का कल्याण तेजी से होगा।

आज समाज में पूर्वापार रूढ़ी परम्परानुसार जो भी धार्मिक विधि इश्ट कार्यार्थ या इश्ट फल प्राप्ति के लिये किये जा रहे हैं। उनमें वेदों का आधार लिया जाता है। वे मंत्र भी प्रार्थना ही हैं। परन्तु केवल प्रार्थना द्वारा इश्ट फल प्राप्ति होगी या नहीं इस पर हमारा विश्वास न होने से, उसके साथ–साथ कुछ मंत्र वेदकाल से सूचित किये गये है, याने यदि हम किसी वेद मंत्र का श्रवण करते हैं तो उन मंत्राचारानुसार काया द्वारा कुछ क्रिया किये बिना उस मंत्र पर हमारी श्रद्धा नहीं होती। उसके कारण हरेक वेदवेदांत मंत्र को विधि का आधार देकर विधि करने के धार्मिक विधि समाज में प्रचलित हुई। आज देशभर में घर–घर में पारिवारिक शांति से लेकर विश्वशांति तक इन विधियों का प्रसार हो रहा है। परन्तु वे वेदमंत्र अपौरूषेय है और जिस व्यक्ति माध्यमों के पठन से उनका उच्चार किया जाता है, उन मंत्रों को उन व्यक्तियों ने सिद्ध किया है या नहीं, इसके बारे में विचार न होने से केवल पठन किया जाता है, इसका मतलब उन उच्चारित मंत्रों द्वारा कुछ साध्य होगा ऐसा नहीं। आज के समाज में प्रचलित परम्परा के पिछे हरेक का सद्हेतु ये ही होता है कि हमें परमेश्वर कृपा से जो भी सुख प्राप्त हुआ है उसमें समाधान न मानकर दूसरों को हमसे अधिक सुख प्राप्त हुआ है और ऐसी सुखी की

प्राप्ति हमें भी हो इसलिये वेदकाल से सूचित की गई सूक्ते (प्रार्थना) का उपयोग धार्मिक विधि के रूप में किया जा रहा है।

और ऐसी विधियों का प्रयोग शतकों तक करने के बावजूद आज हम मानवों के जीवन में सुख–शांति–समाधान नहीं है। इसका मुख्य कारण याने प्राप्त जीवन जिस देहिक माध्यम द्वारा व्यतीत करना है, उस देहिक माध्यम का यथोचित विकास न होने के कारण, हम जो देवदेवतार्जन या धार्मिक विधि करते है उनका फल हम प्राप्त नहीं कर पाते। इसके कारण जब हम गुरूमार्ग को स्वीकार करते है, उस वक्त गुरूमाध्यम को हमारा दुःख कम न कर उसके कृपाशीर्वाद से उस दुःख का निवारण हो ऐसी अपेक्षा रखते है। परन्तु गुरूमार्ग में जिसे दिव्य दृष्टि प्राप्त हो चुकी है उस व्यक्ति माध्यम को अपने सामने बैठे व्यक्ति के जीवन की कमी के बजाये जिस व्यक्ति माध्यम द्वारा यह जीवन व्यतीत करना है, उस देहिक माध्यम में कौन सी कमी है, वे ही दिखती है। और उस वक्त गुरू जो कृपाशीर्वाद देते है और हम स्वीकार करते हैं। उस वक्त गुरू एवं भक्त इनके विचारों की दिशा पूर्णतः विरोधात्मक होती है। गुरू ने प्रदान किया आशीर्वाद उस भक्त की देहिक कमतरता (अविकसितता) दूर करने के लिये होत है। और योग्य विकास हो इस विचार से श्री गुरू कृपावंत होते है परन्तु कृपाशीवादार्थ आये भक्त के विचार ऐहिक सुखों की ओर आकर्षित होता है, इसी कारण इन भक्तों के कल्याणार्थ श्री गुरू ने अपने सामर्थ्य का कृपार्शीवाद के तौर पर उपयोग किया हैं परन्तु इसका एहसास भक्तों को न होने से कई वर्षों तक गुरूमार्ग में रहकर भी गुरू के कार्य की या सामर्थ्य की पहचान हम भक्तों को नहीं होती।

कुछ व्यक्ति गुरूमार्गी होने के बजाये, अपने घराने के इष्ट देवदेवताओं के प्रति कुछ धार्मिक विधि कर इन कमीयों को पूर्ण करने का प्रयास करते है। और उस वक्त जिस देहिक माध्यम द्वारा कृपार्शीवाद धारण करना है, वह देहिक माध्यम कितना अविकसित है, इसका उन्हें अहसास भी नहीं होता और जिन व्यक्ति–माध्यम द्वारा इन विधियों को देवताओं के प्रीत्यर्थ किये जाते है, उन्हें भी देहिक माध्यम की अविकसितता याने कमतरता का पता नहीं चलता। परन्तु गुरूमाध्यम ईश्वर की आज्ञा से मानवी रूप धारण कर ईश्वर का कार्य करने के लिये इहलोक में जन्म लेती है। ऐसा यह जन्म मानवी रूप में होने से और निवारणार्थ आये व्यक्ति भी मानव ही होने से श्री गुरू को उस व्यक्ति सुख–शांति–समाधान प्राप्त करने में किस तत्व की कमी है इसका पता चलता है। और वे कृपावंत होकर कुछ सेवा या कृपाप्रशाद देते हैं वह प्रसाद उस भक्त के जीवन की कमतरताओं की भरपाई करवाने के लिये नहीं दिया जाता, तो सुख प्राप्ति के लिये उसके देहिक माध्यम में जो कमी है, उन कमीयों की भरपाई उस कृपार्शीवाद एवं सूचित सेवा से होती है। परन्तु इस प्रकार से कृपार्शीवादार्थ आये व्यक्ति का प्रधान विषय ऐहिक सुख प्राप्त करना होने के कारण श्री गुरू द्वारा जो कृपार्शीवाद प्रदान किया जाता है, उसे स्वीकार करने का कर्त्तव्य उस व्यक्ति द्वारा होने के बजाये जो कृपार्शीवाद प्रदान किया गया है उसकी अवहेलना ही होती है।

श्री गुरू से भक्त समस्याओं के कारण मिलने आता है। इस मुलाकात को इस जन्म में समस्याओं परत्वे करवाया जाता है। परन्तु इस भेंट (मुलाकात) का योग अनेक जन्मपरत्वे हुआ होता हैं। यदि हम समस्या, कठिन वक्त से नहीं गुजरेंगे तो उन समस्याओं के निवारणार्थ गुरूमार्गी या देवदेवताओं की पूजा, आराधना हम नहीं करेंगे। इसलिये सूज्ञ भक्तों ने प्रथमतः गुरू भेंट होने पर अपनी समस्याओं के बारे में न सोचकर, इस जन्म में ये जो गुरूभेंट हुई है, उस भेंट का लाभ इहजन्म और भविष्य में प्राप्त होने वाले अनेक जन्मों के लिये किस प्रकार से कर पायेंगे यदि इसके बारे में सोचकर गुरू ने सुचित की गई सेवा का लाभ लेते है तो जिन सुखों की याचना से हम गुरू भेंट लेने आये वे सुख हमारे सामने हाथ जोड़कर खड़े है। इसकी प्रचीती (अनुभव) हमें प्राप्त होगी। और इसे सूचित करने का महत्वपूर्ण कारण याने आज की अवस्था में हम भक्तों के जीवन माध्यम याने "हमारी देहिक एवं आत्मिक इनका एकरूपत्व करवाकर श्री गुरू ने इस एकरूप हुए देहिक–आत्मिक अवस्था में अपना स्वयं का आस्तित्व अनन्तकाल के लिये निर्माण कर देने के कारण जीवन व्यतीत करते वक्त यदि

समस्याओं का आभास निर्माण भी होता है तो उसके प्रति दुःखी, कष्टी, असमाधानी न रहकर "उन समस्याओं के निवारण करने का सामर्थ्य श्री गुरू प्रदान करें। केवल इतनी ही प्रार्थना की हमें भविष्य में आवश्यकता होगी।" इसका महत्वपूर्ण कारण ये ही है कि इस समिति का कार्य प्रारम्भिक अवस्था में एक व्यक्ति माध्यम द्वारा साकार हुआ है। उस कार्य का जगत को लाभ होने के लिये, अनेक व्यक्ति माध्यम जो कि कृपावंत हो चुकी है, उनकी जगत के लिये भविष्य में आवश्यकता है।

आज हम भक्तों को इस अवस्था की प्राप्ति आसानी एवं सुलभता से हुई है, इस अवस्था की प्राप्ति के लिये कोई भी प्रखर साधन या बंधनों को अंगीकार नहीं करना पड़ा। इसका मतलब प्राप्त अवस्था मामूली है ऐसा न समझें। इस अवस्था की प्राप्ति के लिये हम भक्त यदि लाखों रूपये खर्च करते, फिर भी आज की यह अवस्था प्राप्त नहीं होती। आज मैं पिछले चार तपों (48 वर्षों) से गुरूमार्ग की सेवा में हूँ और गुरू एवं गुरूमार्गी ऐसे कई व्यक्तियों के कार्य एवं उनके जीवन का बारीकी से अभ्यास किया है। इसमें मुझे ऐसा अनुभव प्राप्त हुआ है कि गुरूमाध्यम को जो–जो अवस्थाएँ प्राप्त हो चुकी होती है, उन अवस्थाओं का लाभ उनको अपने भक्तगणों के कारण देना सम्भव नहीं होता। केवल प्राप्त विस्था परत्वे कृपार्शीवाद प्रदान करने का कार्य ही वे कर पाते है। जिसके कारण उनके भक्तगणों की संख्या अधिक होने पर भी, वे कृपावंत होने के बावजूद अपने व्यक्तिगत जीवन के अलावा दुसरों को सुख–शांति–समाधान प्रदान करने का कार्य ही वे कर पाते हैं। इसीलिये मैं जो "कामकाज" एवं निराकरण आप भक्तों की समस्याओं के निवारणार्थ करता था उस कार्य को पिछले पांच सालों से स्थागित कर गुरू ने कृपावंत होकर मुझे जिन अवस्थाओं का लाभ करवा दिया है, उन अवस्थाओं को आप भक्तों के जीवन में साकार करने के लिये गुरूमार्गदर्शनानुसार साधना मार्ग का अवलम्ब कर, उसी साधना को आप भक्तों के देहिक माध्यम द्वारा भी करवा लिया और इस प्रकार की अवस्थाओं याने "गुरू को प्राप्त अवस्थाओं" का आदान–प्रदान गुरू एवं भक्त में सम्भव हो इसलिये गुरू का काया–वाचा–मन जो कि त्रिगुणात्मक हो चुका होता है, उसी प्रकार की त्रिगुणात्मक अवस्था भक्तों के माध्यम में उन्हें सूचित की गई साधना द्वारा करवानी पड़ती है। और गुरू के समान शिष्य की अवस्था भी त्रिगुणात्मक हो इसलिये गुरू और शिष्य में जो आदान–प्रदान होता है, उसके लिये जिस साधन का उपयोग करना होता है वह साधन भी त्रिगुणात्मक होना आवश्यक होता है। जिससे इन साधना के कारणर गुरू को प्राप्त अवस्था शिष्य में साधना के स्पंद (Vibration) के द्वारा धारणा होती हैं और ऐसा सर्वोत्तम साधन याने पांच वर्षों से आपके द्वारा करवाई गई ऊँकार साधना है।

शेष आगे के अंक में .....

सेवक,

।। शुभं भवतु ।।

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible